Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

सदाचारके शिक्षक पुराण

अत्रि दुष्यन्त रविन्द्रभाई
(शोधछात्र)
श्री सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी – राजकोट

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

आचारः परमोधर्मः सर्वेषामिति निश्चय।

हिनाचारी पवित्रात्मा प्रेत्यचेह विनश्यति ॥

सनातन धर्मके ग्रंथ सर्वोत्तम शिक्षक हैं। उनका अध्येता कभी दुराचारी नहीं सकता। हमारे ग्रंथ सामान्य पुस्तकें नहीं है। वेदोको छोडकर उन सभी ग्रंथोका निर्माण ऋषिमुनियोंने किया है। उनमें अनेकों रहस्य विद्यमान है। यदि वो समाजके सामने प्रकाशित करेगे तो समाजमें व्याप्त दुराचारको हम सदाचारमें परिवर्तित कर सकेंगे।

समाजमें वेदों उपनिषदों ब्राह्मणग्रन्थ ,स्मृतियां और पुराणोंके ज्ञानका अभाव स्पष्ट रूपसे दिखाई दे रहा है। सदाचारोंको छोडकर समाजके पास आज सब कुछ है। विष्णुधर्मोतरपुराणने कहा है, **आचार हिंन न पुनन्ति वेदाः।** आचारहीनको वेद भी पवित्र नहीं कर सकते।

सभी आर्षग्रंथोसे प्रेरणा लेकर पुराणोंकी रचना हुई है। पुराणोंमें पदपद पर सदाचारकी शिक्षा दी है। जिसमें समाजके लिए सहस्त्र कथाएं भी दी गई है। विष्णुपुराणमें सदाचारका अर्थ बताया गया है कि – **साधवः क्षीणदोषास्तु सच्छब्दः साधुवाचकः। तेषामाचरणं यत्तु सदाचारस्स उच्यते ॥**[1]

अर्थात् 'सत्' शब्दका अर्थ साधु है, जो दोषरहित हो उस साधुपुरुषका जो आचरण होता है उसीको सदाचार कहते है। सदाचार मनसे होकर हृदय तक जाते है और हमारे आरोग्यकी रक्षा करते हैं। सदाचारके उपदेशकोकी जानकारी देते पुराणकार कहते हैं कि –

सप्तर्षयोऽथ मानवः प्रजानां पतयस्तथा ।

सदाचारस्य वक्तारः कर्तारश्च महीपते ॥[2]

इस सदाचारके वक्ता और कर्ता सप्तर्षीगण मनु एवं प्रजापति है। आजके इस गतिमान, अर्थप्रधान एवं भोगप्रधान युगमें मानव आचारोंको पीछे छोड कर आया हैं। हिनाचार ही समाजकी दुर्गतिका कारण हैं। इस आधुनिक युगमें लोगोंको अपने आरोग्यकी जरासी भी चिंता नही है, अतः लोगोंको आयसे अधिक शरीरमें व्याप्त रोगोंको दूर करनेके लिए ही खर्च होती हैं। यदि वे लोग पुराणोंमें वर्णित सदाचारोंका आश्रय लेते हैं, उन्हें अपने जीवनका एक भाग

[1] विष्णुपुराण ३/११/३

[2] विष्णुपुराण तृतीय ११/४

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

बनाते हैं, तो कोई भी मनुष्य कभी भी रोगीष्ट, दु:खी, पीडीत नही होगा। यदि शरीर निरोगी रहेगा तो मन प्रफुल्लित रहेगा निरोगी शरीरके लिए सदाचार अति आवश्यक है।

सदाचारकी महता बताते हुए विष्णुधर्मोत्तर पुराणकार कहते हैं कि – सभी शुभ लक्षणोंसे युक्त होने पर भी पुरुष यदि आचरणसे रहित है, तो उसको न विद्याकी प्राप्ति होती है और न अभीष्ट मनोरथोंकी ही व्यक्ति नरकका भागी बनता है।[3]

नरकोंके माध्यमसे पुराणकार लोगोंको सत्पथपर चलनेके लिए प्रेरित करते हैं। प्राय: सभी पुराणोंने नरकोंके वर्णनसे सदाचारका अद्भुत वर्णन किया है। सदाचारमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, ईर्ष्या, राग-द्वेष, कपट, छल, दंभ आदि असत् आचरणोंका त्याग तथा सत्य, अहिंसा, दया, परोपकार, क्षमा, धृति, इन्द्रियग्रह, अक्रोध मुख्य है।

पुराणोंने (यानि हमारे ऋषि-मुनियोंने) दैनिक क्रियाओंको सदाचार और शौचाचारसे जोड दिया है। वह यज्ञोपवित धारण करनेका उपदेश देते है, बादमें व्यक्तिमें जो परिवर्तन आता है, वह अभूतपूर्व होता है। वह प्रतिदिन स्नान करता है, तो शरीर निर्मल व निरोगी रहता है। यज्ञोपवित धारणकर ब्रह्मचर्यका पालन करता है, इससे मनुष्यमें आत्मसंयमका गुण आता हैं। सनातनधर्मकी प्रत्येक क्रियाओंके पीछे सदाचार एवं आरोग्यका उपदेश विद्यमान है।

प्राय: सभी पुराणोंमें **शुचिता** पर अधिक बल दिया है। पुराणकारको पता है, मनुष्यकी निरोगिताके लिए **'शुचिता'** का उपदेश अनिवार्य है। लिंगपुराणमें लिखा है कि, **बाह्यशोचेन युक्त संस्तथा चाभ्यांतरं चरेत।**[4] भारतीय ऋषि जो शरीर शास्त्रके कुशल, प्रणेता व सूक्ष्म अभ्यासी थे। उन्होंने केवल शरीरकी स्वच्छताको ही प्राधान्य नहीं दिया, अपितु बाह्य एवं आभ्यांतर शुद्धिका भी उपदेश दिया हैं। वर्तमान समयमें चरबीसे युक्त साबुनका उपयोग करते हैं। दूसरी और लाखो साल पुराने हमारे विज्ञानवारिधी पुराणकारोंने **'शुचिता'**का सुन्दर एवं प्राकृतिक उपदेश दिया है। उनके शुद्धिके साधन अतिमहत्त्वपूर्ण व पवित्र है। व्यासजी लिखते हैं, "मनुष्यओ भस्म, जल, मृतिका और मन्त्रोंसे स्नान करना चाहिए ये स्नान केवल बाह्य शौचके लिए हैं।"[5]

[3] विष्णुधर्मोत्तर पुराण ३/२५०/७४
[4] पूर्वभागे ८/३१
[5] लिङ्ग पु. ८/३२-३३

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

समाज चिन्तक ऋषियोंकि अन्तः शोचकी कितनी चिन्ता हैं, वे कहते है कि, सम्पूर्ण शरीरमें पवित्र मृतिकाका लेपन करके तीर्थजलमें स्नान करने पर भी **'अन्तःशोच'** बिना मन व शरीर मलिन ही रहता हैं। इस बातको पुष्ट करनेके लिए व्यास मुनि उदाहरण देते है, सदा जलमें रहने पर भी शैवला, झषक, मत्स्य और मत्स्यजीवी क्या कभी पवित्र हुए हैं?[6] इसलिए सदा विधिपूर्वक आन्तरिक पवित्रताका सम्पादन करना चाहिए।

हमें यहांसे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए कि, कैसे स्नान करें? किससे स्नान करें? किन्तु हम तो पशुओंकी चरबीसे निर्मित साबुनोंसे 'स्नान' कर 'अपवित्र' हो रहे हैं। जहां इन साबुनोंका निर्माण होता हैं, वहां हमारी शुद्धिके लिए अनेक पशुओंकी निर्मम हत्याऐं हो रही हैं। उनके मांसको साफ करनेके लिए लाखों लीटर पानीका अपव्यय हो रहा हैं। इसी पानीसे आसपासके किसानोंकी फसलें नष्ट व भ्रष्ट हो रही हैं। ऐसे रक्तसे सींचे हुए अन्नसे लोगोंमें शान्ति कैसे आयेगी? ऐसी कत्लेआम खुल्लेआम हो रहा हैं, फिर भी हम मौन हैं। क्या आदर्श व्यवस्था किसी भी जीवकी हत्या करनेका आदेश देती हैं? इस क्रूरतासे भरे दुष्कृत्यसे हमें बचना चाहिए। **इतने भी स्वार्थी मत बनो कि, मनुष्यके अलावा किसी भी ओर जीवको अधिकार न हो।** हमें ऐसी वस्तुओंका त्याग करना चाहिए। क्योंकि हम राम और कृष्णके संताने हैं। एक छोटीसी क्रिया हमारे मूल्यवान पशुधनकी रक्षा कर सकती हैं। अतः हमें हमारे संवेदनाओसे भरें पुराणोंके आदेशोंका पालन करना चाहिये। पुराणोंका संदेश है कि, **सभी प्राणियोमें आत्मवत दृष्टि रखकर उनके हितके लिए प्रवत रहनेकी अहिंसा कहा गया हैं। इस अहिंसासे आत्मज्ञानकी सिद्धि प्राप्त होती हैं।**[7]

सदाचारका इससे बडा उपदेश क्या हो सकता है? यदि हम **'आत्मवत्'** शब्दको अपना लेते हैं तो सदाचारपर चलनेका एक ठोंस कदम होगा। **स्वयंको सुधारे बीना सृष्टिकी रक्षा कठिन हैं।** हमें हमारी भविष्यकी पीढीके लिए सदाचारी बनना ही होंगा। सुचितापर व्यासजी तालठोकके कहते है, **शुद्ध पुरुषको ही सिद्धियां मिलती हैं, अशुद्ध पुरुषको कभी भी नहीं ।**[8] व्यासजीके इस कथनके पीछे बडा रहस्य छुपा हुआ हैं। शुद्धपुरुषका चित्त (आभ्यन्तर शुचिता)

---

[6] लिङ्ग पु. ८/३४,३५

[7] लिङ्ग पु. ०८/१२

[8] लिङ्ग पु. ०८/३६

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

व शरीर (बाह्यशुचिता) स्वस्थ एवं पवित्र विचारवाला होता हैं। इसीलीए उसे शास्त्रोंमें वर्णित सिद्धियां प्राप्त होती हैं।

आज जितनी जीवहिंसा हो रही हैं। उतनी निश्चित किसी भी कालमें न थी। इस समय पृथ्वी पर कोई भी शाकाहारी नहीं हैं। सभी लोग परोक्षरूपमें मांसाहारी बन गऐ हैं। मांसनिर्यात करनेमें **'आर्यावर्त'** प्रथम स्थान पर हैं। प्रीतेष जैनकी पुस्तक **'हम कितने शाकाहारी हैं'** पढेगे, तो पता चलेगा **हम शाकाहारी हैं ही नहीं**, परोक्षरूपमें हम सब भ्रष्ट हो गये है। हम पुरे दिनमें ऐसी अनेक वस्तुओंका उपयोग करते है, जिनमें पशुओंके शरीरके अनेक हिस्से होते हैं। जैसे कि हड्डियां, त्वचा, नाक, कान, गुदा, अण्डे, चरबी बछडी का मांस इत्यादिसे आईस्क्रीम, जिलेटिन जेली, चाकलेट, जाम, शेम्पू, सिलकओयल, पाउडर, सोने व चांदीके वर्क, चीज, च्युंगम, चिप्स, ग्लिसरीन, सनटेल ऑईल, धूम्रपान, पान-मसाला, गुटका, साबुदाना, चमडा, रेशम, नेलपोलिश, लिपस्टिक, सेन्ट, केप्सूल, डाल्डा घी, ब्रेड, बिस्कुट, साबुन इत्यादि वस्तुओने इस पवित्र सृष्टिको क्रूर विकृत स्वार्थी दयाविहीन बना दिया हैं। हमे ऐसी वस्तुओंके उपयोगसे बचाना चाहियें।

कलियुगके मनुष्योमें पाप, क्रोध और धर्महीनता बढ जाती हैं। कलियुगके निम्नलिखित लक्षणोंके अध्ययनसे लोग इन दोषोंसे बच सकते हैं।

१. पापखण्डका प्रचार बढ जाएगा। (न्यूज चैनलें, फिल्मों व वामपंथी लेखकोंके द्वारा)
२. जीविकाके लिए साधुका वेश बनाऐंगें।
३. लोगों स्त्री, बालक और गायोंकी हत्या करेंगे।
४. परस्पर एक दुसरेंको मारकर तथा अपहरण कर स्वार्थ सिद्ध करेंगे।
५. अधर्मकी ओर लोगोंकी विशेष रुचि हो जाएगी।
६. सभीके आचार-विचार तामसी हो जाएगें।
७. भृणहत्याकी प्रवृत्ति हो जायेगी।
८. धर्मके एकमात्र कारण यज्ञका विनाश हो जायेगा।
९. लोग यूथके युथ एकत्र होकर परस्पर द्वेषकी भावनासे युक्त हो जाएंगे।
१०. सब और अराजकता होनेके कारण लोग अत्यन्त दु:खी रहेंगे। श्रौत और स्मार्तधर्म नष्ट हो जाएगा। सभी लोग काम और क्रोधके वशीभूत हो जाएंगे। लोग मर्यादा, आनन्द, स्नेह और

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

लज्जासे रहित हो जाएंगें। धर्मके नष्ट हो जानेपर वे नष्ट हो जायेंगे। विषादसे व्याकुल हुए लोग अपनी पत्नी और पुत्रोंक भी त्याग कर देंगे। अकाल और अत्याचारसे पीडीत लोग अपने जनपदोंको छोडकर निकटवर्ती देशोंकी शरण लेंगे।[9]

इन वर्णनको लोग समझे। इसे मात्र भविष्यकथनकी दृष्टिसे नहीं देखना चाहिए। ये भविष्य कथन तो है ही, किन्तु भविष्यकी चिन्ता भी दर्शाता हैं।

सुभाषित व सुक्तिके माध्यमसे सदाचारोंका उपदेश

पुराणोंका उपदेश लोगोंके मानस परिवर्तनके लिये हैं। लोगोंमें सदाचारोंका आविर्भाव हो और सन्मार्गपर चले इस लिये कान्तासम्मित उपदेश सुभाषितों एवं सुक्तियोंके माध्यमसे दिया हैं। इन सुभाषितोंमें कैसे चलें, कैसे पानी पीये, किस प्रकार शिक्षा ग्रहण करें, किस रीतिसे लोगोंको पहचानें, धनविषयक उदात विचार, मित्र आदि विषयोंका वर्णन पुराणकारने लोगोंमें सुधार करने हेतु किया हैं।

मत्स्यपुराणमें राक्षसों त्रिपुरनगरका निर्माण करते हैं। ईश्वरको प्रसन्न करनेके लिये तप और व्रत करते हैं। उस समय वे मांसाहारका त्याग करते हैं।[10] पुराणोमें असंख्य स्थानोपर अहिंसाकी स्तुतिकी हैं। राक्षसोंके द्रष्टान्तसे पुराणोंने शिक्षा दी है कि; **ईश्वरकी पसन्नाताके लिये मांसाहारका त्याग अनिवार्य हैं।'** इस प्रसंगसे दूसरा संदेश भी मिलता हैं। परमात्माको मांसाहार व मांसाहारी पसंद नहीं हैं। **क्योंकि यह कृत्य ईशवरकी बनाई सृष्टिका ही संहार कर रहा हैं।**

पुराणोंमें तीर्थ स्थानोंका बडा विस्तृत वर्णन उपस्थित हैं। जो ऐसा मानते है कि, केवल तीर्थस्थान, पूजा, दान करनेसे ही पुण्यकी प्राप्ति होती तो वह गलत बात हैं, **जो प्रतिग्रहसे विमुख, संतुष्ट, जितेन्द्रिय, पवित्र और अहंकारसे दूर रहता है, उसे तीर्थ फलकी प्राप्ति होती हैं। जो क्रोधरहित, ईमानदार, सत्यवादी, दृढव्रत और व्यवहार करता हैं, वह तीर्थ फलकी प्राप्ति होती हैं। जो क्रोधरहित, ईमानदार, सत्यवादी, दृढव्रत और व्यवहार करता हैं, वह तीर्थफलका भागी होती हैं।**[11]

---

9 आज हम देख रहे है सीरिया और अफगानीस्तान आदिसे भागे हुए शरणार्थी।

10 (मत्स्य – १२९/१८)

11 मत्स्य – ११८/१०-११

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

इस श्लोकमें **'आत्मोपम्य भूतेषु'** पदपर ध्यान देना आवश्यक हैं। हम आज देख रहे हैं कि, तीर्थ स्थानोंमें भी पशुओंकी निर्मम हत्या हो रही हैं। राष्ट्र और प्रकृति पृथ्वीको यदि बचाना है तो शरुआत तीर्थस्थानोंकी निर्मलतासे करनी होंगी पुराने समयमें हमारे तीर्थस्थल कैसे थें। देखिये अत्रि ऋषिका आश्रम

क्रव्यादाः प्राणिनस्तत्र सर्वे क्षीरफलाशनाः।

निर्मितास्तत्र चात्यर्थमत्रिणा सुमहात्मना॥[12]

महर्षि अत्रिने अपने आश्रममें ऐसा उत्तम वातावरण बना दिया था कि, वहांके सभी मांसभोजी जीव दूध और फलका आहार करते थें।

कितना सामर्थ्य है हमारे शास्त्रोंके विचारोंमें हिंसक पशुओंको भी सदाचार सिखाते हैं, सिखाते नहीं अपितु उसका फल भी मिलता हैं। अत्रि महर्षिने अपने आश्रममें अहिंसाकी इतनी उपासनानी कि, हिंसक भी अहिंसक हो गये। अत्रिकी अहिंसा सबके लिए थी। हमारे ऋषियोनें **अहिंसा प्रतिष्ठियां तत्सन्निधौ वेरत्यागः** को चरितार्थ कर दिखाया। ऐसे उत्तम मनुष्यों और उत्तम वातावरणका निर्माण कैसे होंगा? उसका वर्णन भी पुराणोंने किया हैं। गरुडपुराणमें अध्याय १०७ से ११५ तक ९ अध्यायोंमें सुभाषितोंके माध्यमसे सदाचारका उपदेश दिया हैं। पहले ही श्लोकमें व्यासजी घोषणा करते हैं कि –

नीतिसारं प्रवक्ष्यामि अर्थशास्त्रादि संश्रितम ।

राजादिभ्यो हितं पुण्यमायुः स्वर्गादिदायकम ॥[13]

इस श्लोकसे गरूडपुराणकार नीतिशास्त्र कहने कि, शरुआत करते हैं। नीतिसारका हेतु बताते हुए व्यासजी कहते है, **राजादिभ्यो हितं पुण्यमायुः स्वर्गादिदायकम** यह अर्थशास्त्र युक्त नीतिशास्त्र हैं।

पुराणोंमें वर्णित सुभाषितोंसे निम्नलिखित शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए, श्रेष्ठोंका संग करनेसे कभी भी दु:ख नहीं आएगा। परस्त्री, परद्रव्य व परस्त्रीसे परिहास अन्य गृहमें वास यह सब वर्जित समझे। शरीरमें उत्पन्न रोग शत्रु हैं और वनौत्पन्न औषधि हितकारी हैं। गुणी

[12] मत्स्य – ११८/६४

[13] गरुड – १०८/१

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

तथा धार्मिक जीवन सार्थक हैं। मांगलिक कार्यमें तत्पर ही श्रेष्ठ भार्या हैं। आपतिमें धन और अपनी रक्षा सदैव करें।

मत्स्यपुराणमें गर्भिणी स्त्रीके पालनीय नियमोंका वर्णन किया गया हैं। जो तर्कसम्मत हैं, स्त्री तथा गर्भके आरोग्यके रक्षण व पोषक हैं।

वृक्षके मूलपर न बैठे। मूसल ओखली आदि पर न बैठे। जलके भीतर जाकर स्नान न करें। सुमसान घरमें न रहें। मनको उद्विग्न न करें। नखसे पृथ्वी पर रेखा न खींचे। कठिन परिश्रमका काम न करें। लोगों के साथ विवाद न करें। शरीरको तोडे-मरोडे नहीं। बाल खोलकर न बैठे। कभी अपवित्र न रहें। कभी भी नीचे सिर करके न सोये। नग्न शयन न करें। अमंगल वाणी न बोले। नित्य मंगल कार्य करें। अपनी रक्षाका ध्यान रखें। स्वच्छ वेश-भूषासे युक्त रहें। प्रसन्न मुखी होकर सदा पतिके हितमें संलग्न रहें।

इन सभी नियमोंका पालन क्यों? इसका बताते हुए व्यासमुनी कहते हैं कि,

यस्तु तस्या भवेत पुत्रः शिलायुर्वृद्धिः संयुताः।

अन्यथा गर्भपतनमवाप्नोत्रि न संशयः॥

अर्थात् जो गर्भिणी स्त्री विशेषरुपसे इन नियमोंका पालन करती है, उसके गर्भसे पुत्र उत्पन्न होता हैं, वह शीलवान एवं दीर्घायु होता हैं। इन नियमोंका पालन न करने पर निस्संदेह गर्भपातकी आशंका बनी रहती हैं।

इतनी उदात भावनाओंसे भरें पुराणोके सच्चे ज्ञानको भुलानेकी सजा समाज भुगत रहा हैं। लोग भटके हुए हैं, उसे पता नहीं कि हमारे पुराणोंमें ऎसी सुन्दर जीवनसे जुडी हुई बाते भरी हुई हैं। भारतीय दर्शन 'पुनर्जन्म'का समर्थन करता हैं, इसलिए पुराणों में **'अत्रैव स्वर्ग अत्रैव नर्क'** तथा **'आत्मवत् सर्वभूतेषु'** का उपदेश विद्यमान हैं। उनके समर्थनमें 'नरकों'का विस्तृत वर्णन भी पुराणोंने किया हैं।

यदि हम सुधरनेकी वृत्तिसे पुराणोंका अध्ययन करेंगे तो पुराणसे सरल कोई ग्रन्थ नहीं है। पुराण तो क्या एक भी भारतीय ग्रन्थ कठिन नहीं हैं। हम ही व्यस्त है हमारे लाखों करोडों भारतीयों पर दमन करनेवाली अंग्रेजोंकी अवैज्ञानिक भाषा सिखनेमें। इससे हमारे मुल कट रहे हैं। **मुलविहिन समाजका पतन निश्चित हैं।** वहां परोक्षरूपसे आक्रान्ता ही शासन करते हैं। हम नाम मात्रके भारतीय हैं, आचार विचार,रहन-सहनसे विदेशी हो गये हैं। यदि हम भारतीय ग्रन्थोंके समीप जायेंगे तभी पुनः आर्यावर्तका निर्माण होगा।

हम श्रेष्ठ थे, जंगली हो गये।

Vidhyayana - ISSN 2454-8596
An International Multidisciplinary Peer-Reviewed E-Journal
www.j.vidhyayanaejournal.org
Indexed in: ROAD & Google Scholar

पहले आर्य थे, अब इन्डियन हो गयें।

सन्दर्भ ग्रन्थ

१. मत्स्यमहापुराण – गीताप्रेस गोरखपुर, १०/सं. २०७१
२. गरुडमहापुराणम – चौखंभा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, प्रथम, सन २०१५
३. श्री लिङ्गमहापुराणम – गीताप्रेस गोरखपूर, द्वितीय, सं. २०७१
४. श्रीविष्णुपुराण – गीताप्रेस गोरखपुर, ५६, सं. २०७६
५. हम कितने शाकाहारी है ? ले. प्रीतेश जैन
६. विष्णुधर्मोतरपुराण – क्षेमराज श्रीकृष्णदास, सं. १९६९